जनवाचन आंदोलन
बाल पुस्तकमाला

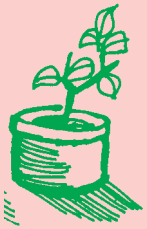

" किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं "

–सफ़दर हाश्मी

आज की उपभोक्ता संस्कृति का एक ही नारा है 'खरीदो और फेंको'। इससे एक ओर कचरे और मलबे के ढेर बढ़ रहे हैं तो दूसरी ओर पर्यावरण में ज़हर घुल रहा है। हम चाहें तो इस स्थिति से निबट सकते हैं। परंतु इसकी पहल हमें स्वंय करनी होगी – खुद अपने घर से।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्यः 10 रुपए B - 48 Price: 10 Rupees

कूड़ा कचरा

लौरी बेकर

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

कूड़ा-कचरा: *Rubbish by Laurie Baker*
अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन: लौरी बेकर

लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 2000, 2002, 2006

मूल्य: 10 रुपए
Price : 10 Rupees

Published by Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

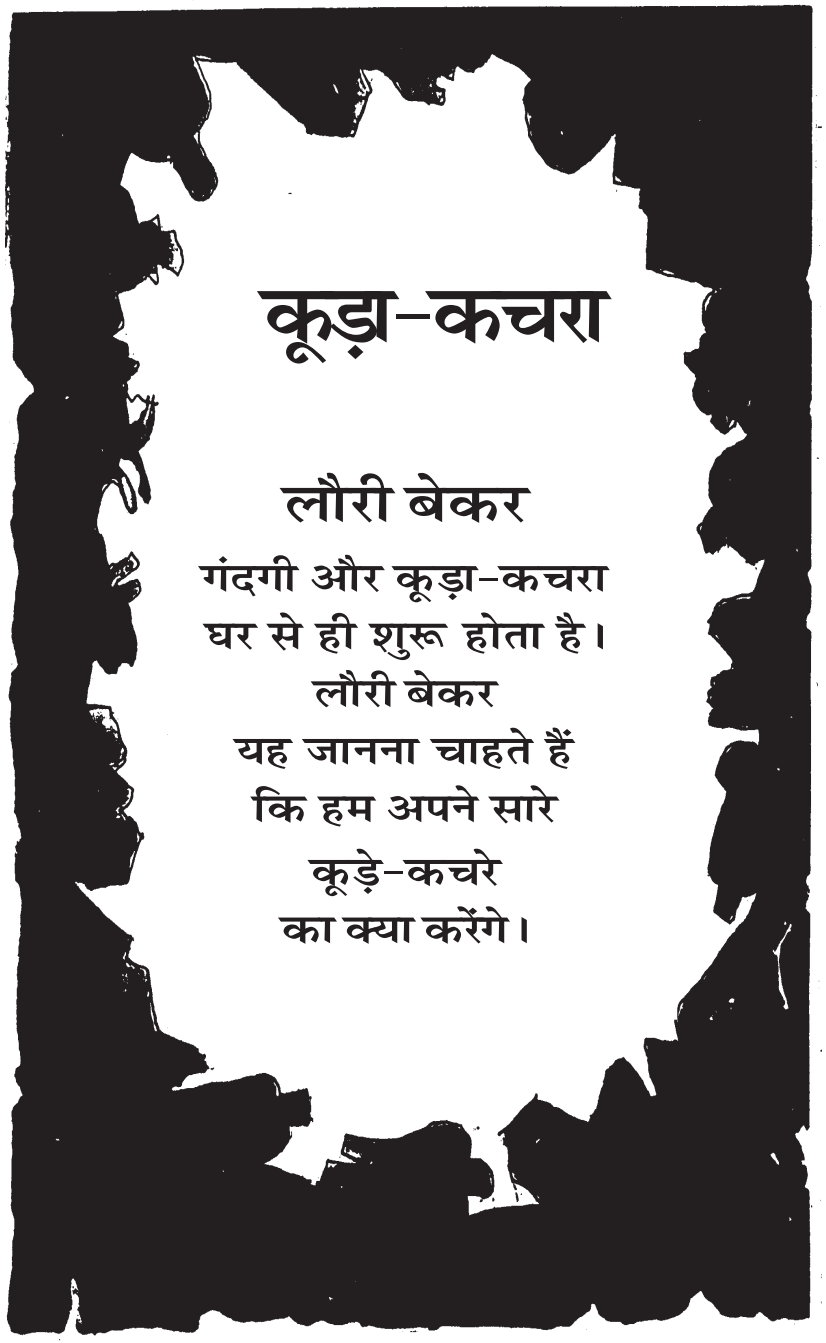

कूड़ा और कचरा

शब्दकोश के अनुसार :

कूड़े का मतलब है बेकार और फेंकी हुई चीज़ें।

कचरे का मतलब है बेकार की गंदगी और बदबूदार मलबा।

यह चीज़ें आखिर हमें कहां मिलती है?

सड़क के किनारे या नालियों के किनारे। दुकानों के सामने और बाज़ारों में। सभी लोगों के घरों के सामने।

किस प्रकार का कूड़ा-कचरा मिलता है?

सभी प्रकार का! काफी मात्रा में प्लास्टिक मिलता है। कागज़, गत्ता और कपड़े की कतरनें। पत्तियां, जंगली पौधे और खरपतवार। पुराने डिब्बे, टूटी बोतलें आदि और कभी-कभार कोई मरा जानवर।

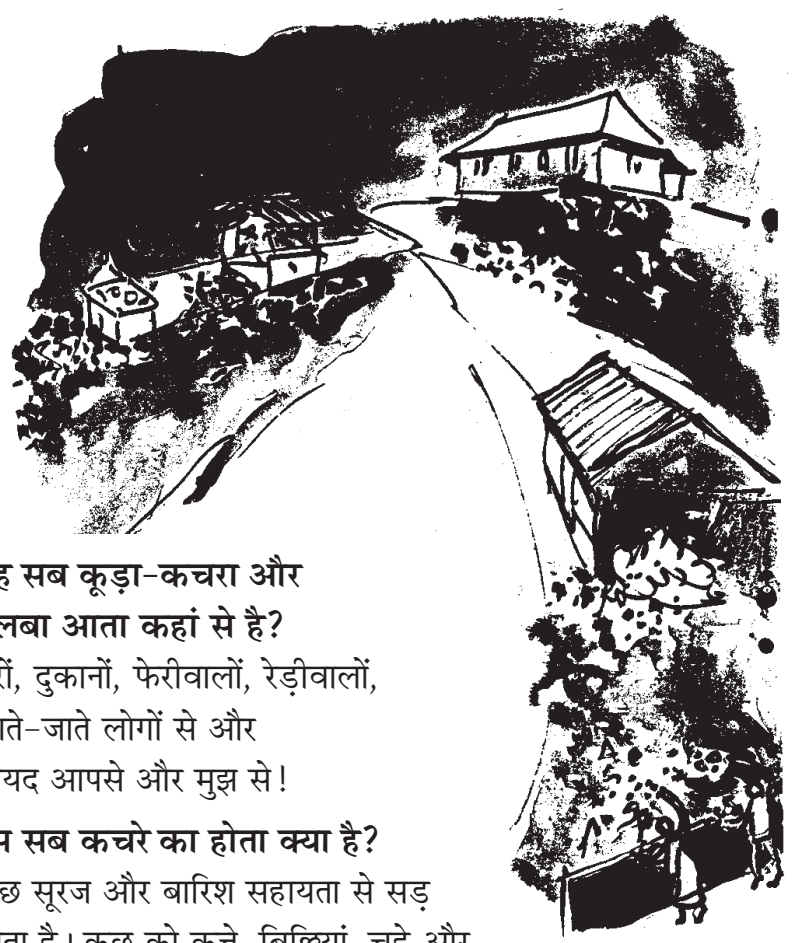

यह सब कूड़ा-कचरा और मलबा आता कहां से है?

घरों, दुकानों, फेरीवालों, रेड़ीवालों,
आते-जाते लोगों से और
शायद आपसे और मुझ से!

इस सब कचरे का होता क्या है?

कुछ सूरज और बारिश सहायता से सड़ जाता है। कुछ को कुत्ते, बिल्लियां, चूहे और बकरियां इधर-उधर बिखरा देते हैं।
कभी-कभार कोई उसको आकर आग भी लगा देता है।
यह सब 'एजेंट' कचरे को सिर्फ फैलाते हैं उसे हटाते नहीं हैं।

इस सब के बारे में आप क्या सोचते है - आपका क्या मत है?

'उन्हें' कुछ करना चाहिए। इस मलबे को ठिकाने लगाना चाहिए।
साल में एक बार, लाखों में से एक इंसान शायद इसके बारे में किसी अखबार के संपादक को एक चिट्ठी लिखता है!

जब यह कूड़ा-कचरा यहां से उठाया जाता है तब यह कहां जाता है?

अक्सर कचरा वहीं पड़ा रहता है और मलबे का ढेर बढ़ता रहता है। कभी-कभी **गांधी जयंती** या **साफ शहर, सुंदर शहर** कार्यक्रम के तहत मलबे को हटाया जाता है।

तब मलबे को हटा कर एक ऐसे स्थान पर ले जाया जाता है जहां वो आंखों में कम खटके।

मलबे का काफी बड़ा हिस्सा उसे लादने और ढोने के दौरान इधर-उधर गिरकर फैल जाता है।

हम अपने घर के कूड़े-कचरे का क्या करते है?

वो काफी तेज़ी से बढ़ता जाता है।

जो नहीं जल सकता है उसे हम एक गड्ढे में दबा देते हैं।

अक्सर तो हम केले के छिलके और अंडे के खोल जैसी चीज़ों को दीवार के उस पास फेंक देते हैं।

हमने एक-बार खाद भी बनाने की कोशिश की थी।

पर हम जल्दी ही सीख गए कि प्लास्टिक की खाद नहीं बनती।

हमारे घर में एक कूड़ादान या कचरे का डिब्बा है, परंतु वो बहुत जल्दी भर जाता है और तब हमें समझ में नहीं आता है कि हम उसे कहां खाली करके आएं।

अक्सर कौए और बिल्लियां ही कचरे को इधर-उधर फैलाते रहते हैं।

हम कुछ क्यों करें?

क्योंकि उसमें में सड़ांध और बदबू आती है।

क्योंकि कचरा देखने में खराब लगता है।

कूड़े-कचरे में मच्छर, मक्खियां, चीटियां पैदा होती हैं और शायद कुछ बीमारियां भी।

अक्सर हमारे बच्चे खेलते समय इस कूड़े-कचरे के ढेर से गंदे हो जाते हैं।

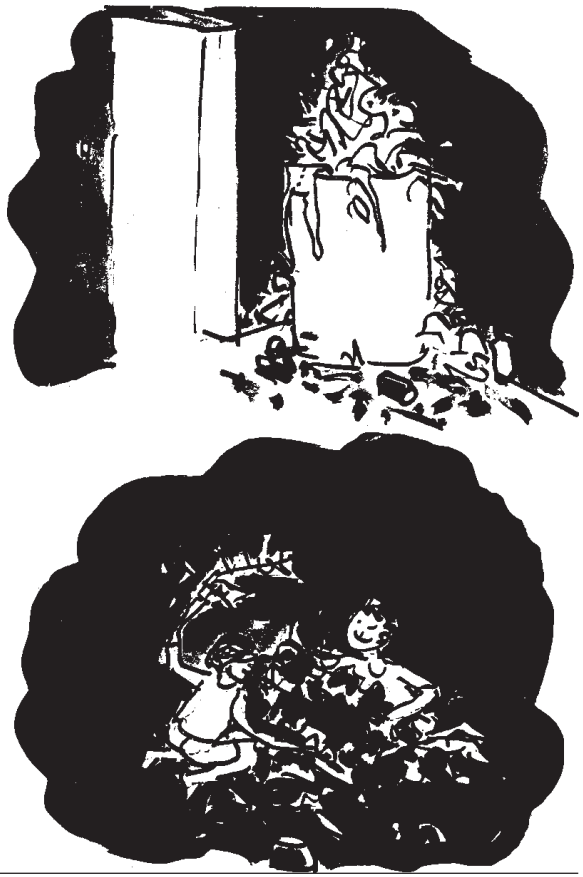

पर क्या हम इस कचरे के बारे में कुछ कर सकते हैं?
अगर हां तो कैसे? हम इसे कहां ले जा सकते हैं?

अगर हमें अपना कूड़ा-कचरा डालने के लिए कहीं कोई मलबे का ढेर मिल भी जाए तो भी हम अपने कचरे को वहां तक कैसे लेकर जाएं। पर यह काम तो प्रशासन और नगरपालिका का है। उन्हें ही मलबा उठाने की पहल करनी चाहिए।

वो इसके बारे में कुछ क्यों नहीं करते?
कौन सा प्रशासन? कौन सी नगरपालिका?

हां-हां! कोई तो ऐसा सरकारी विभाग होगा जो शहर का संचालन करता हो! चाहें वो मेयर हो या कलैक्टर हो या फिर कोई और!

परंतु आखिर सरकार क्यों करे इस गंदे काम को?

यह मलबा आखिर किसने पैदा किया? हमने।

क्या मेयर हमारे लिए प्लास्टिक की थैली में दूध खरीद कर लाया?

क्या कलैक्टर ने हमारे केले खाकर उनके छिलकों को ज़मीन पर फेंका?

क्या प्रशासन इसके बारे में कुछ कर भी सकता है?

छोटे शहर की नगरपालिका के पास शायद दो-चार ट्रक हों और कुछ सफाई कर्मचारी हों। उनसे जितना बन पाता है वो उतना कूड़ा-कचरा उठाते हैं और उसे कहीं और ले जाकर पटक देते हैं। परंतु इसमें बहुत खर्चा आता है!

सड़क पर कचरा

अक्सर सड़कों के किनारे काफी मलबा और कूड़ा-कचरा पड़ा रहता है। इसकी कोई भी ज़िम्मेदारी नहीं लेता।

'मैंने तो इसे डाला ही नहीं तो फिर मैं इसके बारे में क्यों कुछ करूं?'

जगह-जगह पड़े मलबे के ढेरों को उठाना असल में काफी दिक्कत का काम है।

मलबे के ढेर के पीछे वाले स्थान को लोग शाम के 7 बजे से सुबह के 7 बजे तक एक 'सार्वजनिक शौचालय' जैसे इस्तेमाल करते हैं (असल में एक 'निजी शौचालय' की तरह)।

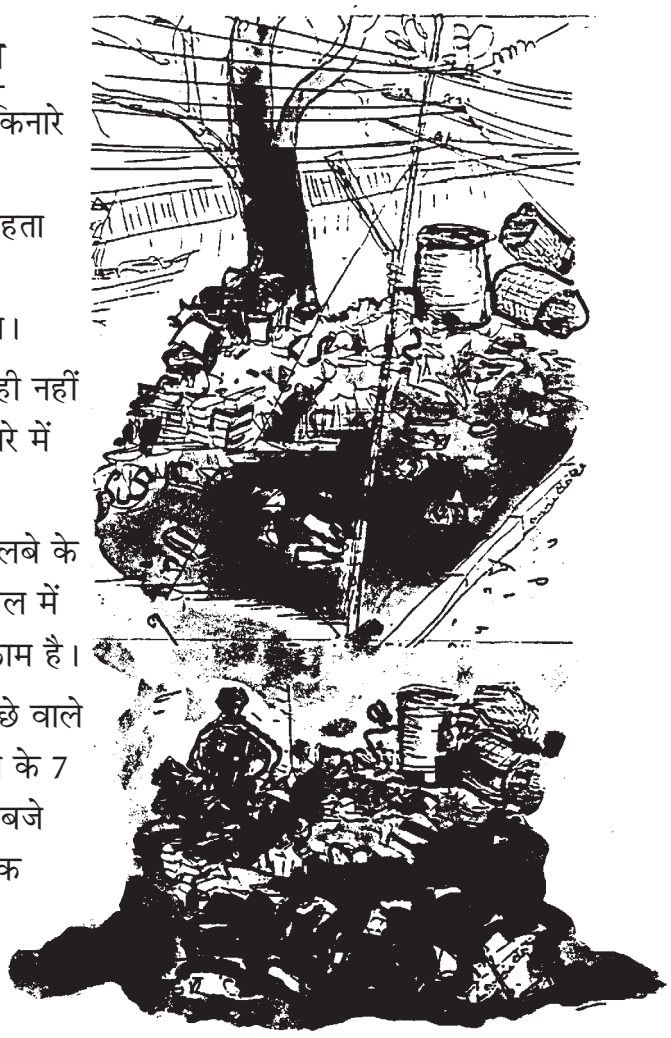

कारखानों से निकला कचरा

इसे तभी देखा जा सकता है जब फैक्ट्री कोई ज़हरीला धुंआ हवा में फेंके या फिर ज़हरीला पानी नदी या नालों में डाले। असल में तो फैक्ट्रियों को अपना कूड़ा-कचरा खुद ही ठिकाने लगाना चाहिए। परंतु फिर भी बुनियादी सवाल अभी तक खड़ा है। फैक्ट्री वाले भी अपने कूड़े-कचरे को आखिर कहां डालें?

अगर आप अक्लमंद हैं तो शायद आप इस सवाल का उत्तर भी ताड़ गए होंगे।

अगर आप समाजसेवी कार्यकर्ता के रूप में फैक्ट्री से निकलने वाले ज़हरीले कचरे के बारे में कुछ करना चाहें भी, तो क्या फैक्ट्री के ऊंचे लोहे के गेटों के पास तैनात सिक्योरिटी गार्डस आपको अंदर घुसने देंगे?

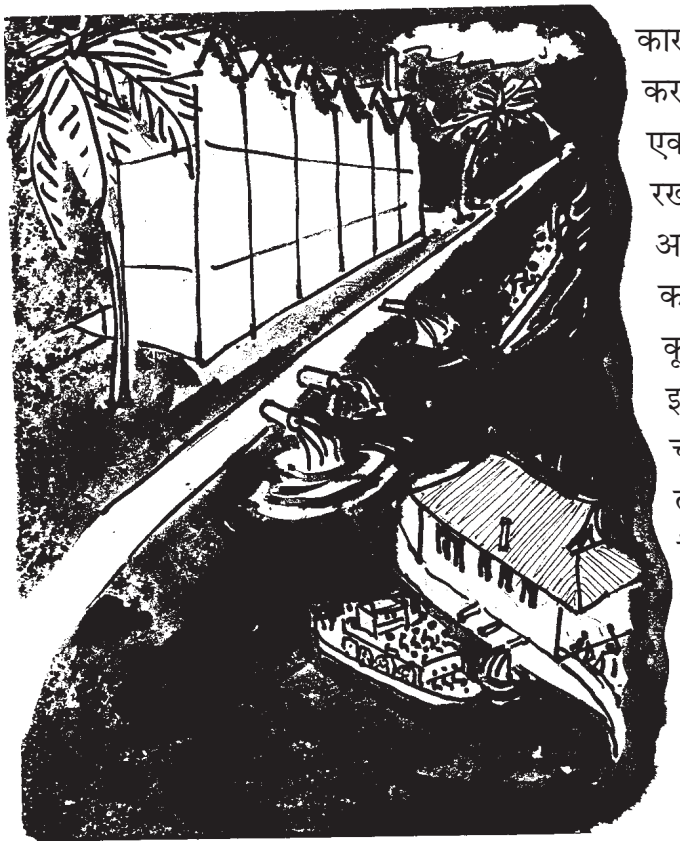

कारखानों की बात करते समय हमें एक बात याद रखनी चाहिए। हमें अपनी नदियों को कचरे के गंदे कूड़ेदान जैसे नहीं इस्तेमाल करना चाहिए। सभी लोग बिरला की फैक्ट्री ग्रासिम के बारे में जानते हैं। पर ऐसे न जाने कितने और कारखाने हैं जो अपने दूषित रसायनों को साफ पानी की नदियों और नालों में डाल रहे हैं। वो कितना नुकसान कर रहे हैं इसका उन्हें कोई अंदाज़ नहीं है।

मुझे एक बात और याद आ रही है। पास में ही एक शहर है जो काफी बड़ा पर्यटन का केंद्र बन गया है। वहां पर पर्यटकों को जानकारी देने के लिए एक आफिस खुला है जिसके पास कुछ 'जनसुविधाएं' बनाई गई हैं। जब कोई पर्यटक इस शौचालय का उपयोग कर फ्लश की चेन खींचता है तो उसका मलबा छपाक से पास की नदी में गिरता है जहां अन्य सहयात्री नौका विहार का आनंद ले रहे होते हैं! क्या नज़ारा है!

हम इन समस्याओं के बारे में क्या कर सकते हैं?

मैं यहां एक बात स्पष्ट करना चाहता हूं कि इस सारी समस्या का हल खोजना केवल 'सरकार या नगरपालिका' का ही काम नहीं है।

उन्हें कुछ अवश्य करना होगा परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपने हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और बस इंतज़ार करते रहें।

यह बात साफ है कि किसी प्रशासनिक अधिकारी या अफसर को इस बढ़ती समस्या की कुछ ज़िम्मेदारी संभालनी होगी। दूसरी तरफ इस समस्या के असरदार और स्थाई हल के लिए सभी लोगों को मिलकर काम करना होगा।

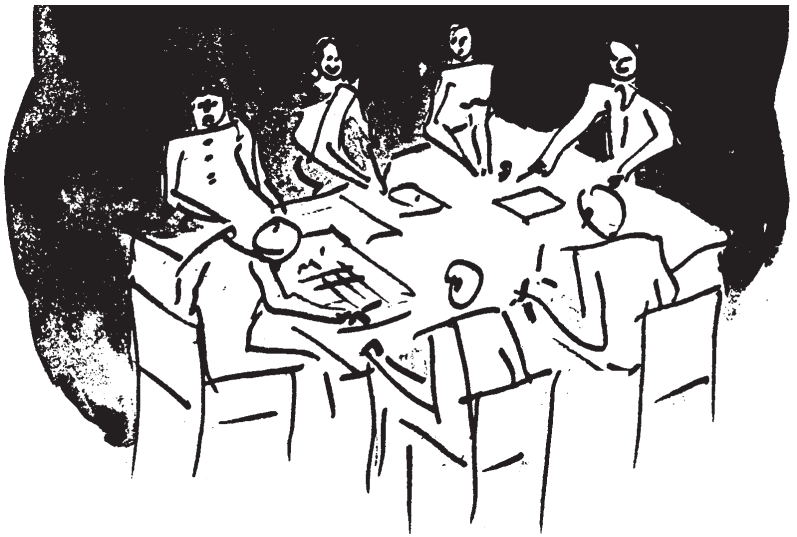

इस दिशा में हम क्या कदम उठा सकते हैं?

1. पहले सारी स्थिति को समझें।
   फिर समस्याओं का अध्ययन करें।
   अंत में कोई इलाज खोजें, कोई हल खोजें।
2. सभी लोगों की सहायता लें। सभी के विचार और सुझावों को नोट करें।
3. अगर संभव हो और ज़रूरी लगे तो कुछ प्रयोग भी करें।
4. देखें कि आप और आपका परिवार कूड़े-कचरे के ढेर को कम करने में खुद क्या कर सकता है।
5. देखें कि दुकानदार, दूध, सीमेंट, मिठाई के उत्पादक कूड़े-कचरे को कम करने में कैसे सहायक हो सकते हैं?
6. आजकल हम जो कुछ भी खरीदते हैं उसमें तमाम पैकिंग होता है! इस समस्या को समझने की कोशिश करें और इसका कोई हल खोजें।
7. सरकार से मांग करें कि वो कचरे से निबटने के लिए ज़मीन अलाट करे।

यहां कुछ सुझाव हैं

प्लास्टिक एक ऐसा मनहूस कचरा है जिसका प्रबंध कर पाना मुश्किल काम है।

आप चाहें तो प्लास्टिक को जला सकते हैं, परंतु उससे पर्यावरण बुरी तरह से दूषित होगा।

आप चाहें तो उसे दुबारा इस्तेमाल यानि री-साइकिल कर सकते हैं परंतु उसमें और उर्जा खर्च होगी।

वैसे प्लास्टिक एक उपयोगी पदार्थ है।

परंतु ज़्यादातर प्लास्टिक ज़मीन से निकाले गए तेल से बनती है और इस तेल की भारत में बहुत कमी है। हमें विदेशों से हज़ारों करोड़ रुपए का प्रति साल तेल खरीदना पड़ता है। प्लास्टिक के उत्पादन में भी बहुत सारी उर्जा खर्च होती है और हमारे देश में वैसे ही उर्जा की काफी कमी है।

अपने साथ हमेशा कपड़े या कागज़ का बना थैला लेकर चलें।

क्या यह ज़रूरी है कि एक किलो आलू या आधा किलो टमाटर आपको अलग-अलग प्लास्टिक की थैलियों में पैक करके दिए जाएं?

हमें प्लास्टिक के बेकार इस्तेमाल पर लगाम लगानी चाहिए। इस बात को पहले तो खुद हम अपनी ज़िंदगी में अपनाएं। फिर दुकानदारों और फेरीवालों को इससे हो रहे नुकसान के बारे में समझाएं और उन्हें प्लास्टिक की थैलियां कम इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करें।

एक इलाज?

जब हमें किसी चीज़ को पैक करना हो तो हम उसे कागज़ या कपड़े में बांधें। यह दोनों चीज़ें काफी मात्रा में उपलब्ध हैं। हम चाहें तो इनका उत्पादन बढ़ा सकते हैं। कागज़ को हम जब चाहें री-साइकिल यानि दुबारा इस्तेमाल कर सकते हैं और इसमें अधिक उर्जा का खर्च भी नहीं होता है।

इस तरीके से एक ओर तो कचरे की मात्रा में भारी कमी आएगी और दूसरी ओर काफी लोगों को रोज़गार भी मिलेगा।

सड़ने वाली चीज़ों से खाद

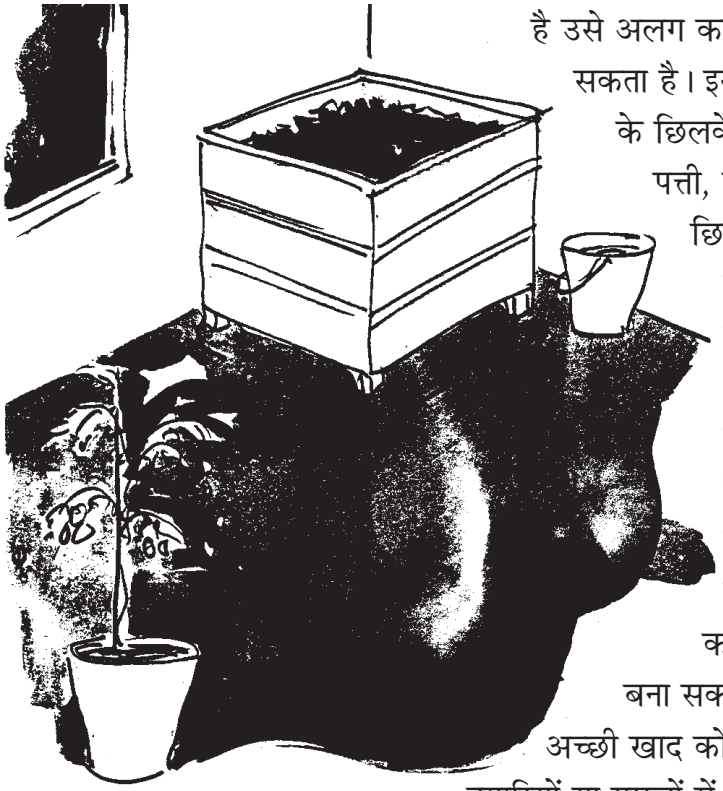

जो कोई भी चीज़ बाद में सड़ती है उसे अलग करके रखा जा सकता है। इसमें सब्ज़ियों के छिलके, चाय की पत्ती, फलों के छिलके और बीज शामिल हो सकते हैं। अगर आपके पास एक वर्ग मीटर ज़मीन हो तो आप उसमें इस कचरे से खाद बना सकते हैं। इस अच्छी खाद को आप क्यारियों या गमलों में डाल सकते हैं और इस प्रकार आप खुद अपनी सब्जियां और फल-फूल आदि उगा सकते हैं।

असल में घर से जो कूड़ा-कचरा निकलता है उसमें सड़ने वाली चीज़ों की मात्रा ही सबसे ज़्यादा होती है। सड़ने वाली वस्तुओं की खाद बनाकर आप खाने की वस्तुओं पर अपना खर्चा कम कर सकते हैं। दूसरी ओर ताज़ी सब्ज़ियां, फल उगाने और उन्हें खाने का भी आनंद आपको मिल सकता है।

आपके घर में जितना भी पुराना कागज़ जैसे अखबार, पत्रिकाएं आदि निकलें उन्हें जहां तक संभव हो एकदम सीधा और सपाट करके रखें। आप उन्हें कबाड़ी को बेंच सकते हैं। अगर आप कबाड़वाले से कहेंगे तो वो नियमित रूप से आपके घर से आकर रद्दी खरीद कर ले जाएगा।

इसी प्रकार डिब्बों, बोतलों- चाहें वो टूटा हुआ कांच ही क्यों ने हों प्लास्टिक की बोतलों हरेक प्रकार की धातु को- इसमें टूथपेस्ट के पुराने ट्यूब, अल्युमिनियम की पन्नी, पुराने बर्तनों को कबाड़ीवाले के हाथ बेंचा जा सकता है। कबाड़ीवाला इन्हें किसी ऐसे कारखाने को बेंच देगा जहां ये पुरानी चीज़ें गलकर नई धातु की चीज़े बन जाएंगी।

इस प्रकार आपके घर का कचरा भी काफी कम हो जाएगा।

अक्सर कचरे को भट्टियों में जलाने का सुझाव दिया जाता है। परंतु भट्टियों से कई नुकसान हो सकते हैं जैसे:

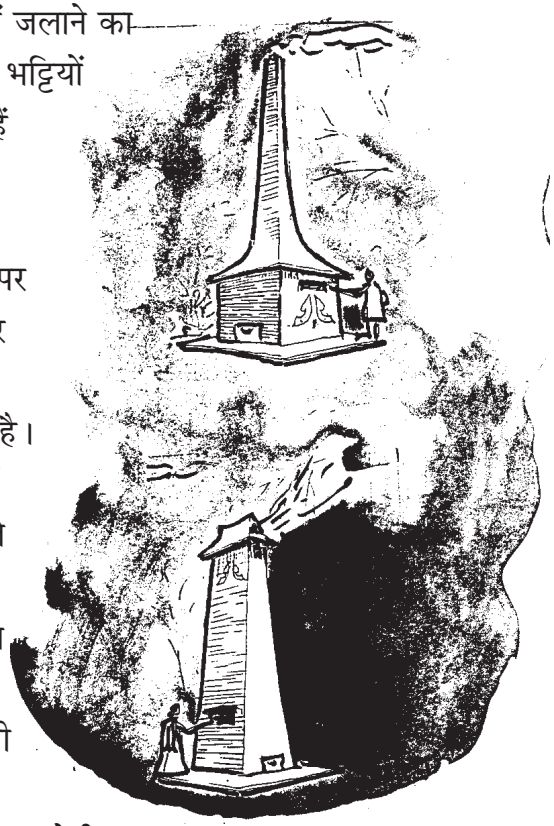

1. वायु का प्रदूषण।
2. कभी-कभी भट्टियां ऊपर तक इतनी लबालब भर जाती हैं कि उनमें कचरा जलता ही नहीं है।
3. अक्सर लोग भट्टियों में ऐसा मलबा भी भर देते हैं जो कि जलने योग्य यानि ज्वलनशील नहीं होता है। इस प्रकार के मलबे से भट्टी में जाम लग जाता है।
4. भट्टियों की क्षमता सीमित होती है और उनमें केवल थोड़ा सा ही कचरा समा पाता है।
5. लोग भट्टियों में गीली चीज़ें भी डाल देते हैं जो जलने में बाधक बनती हैं।
6. जिन चीज़ों को हम जलाना चाहते हैं उन्हें हम सही प्रकार से दुबारा इस्तेमाल या री-साइकिल करके अधिक फायदे में रह सकते हैं।

भट्टियों का कुछ फायदा तो है परंतु उनका उपयोग काफी सीमित है।

घर में ही कूड़ा-कचरे को अलग-अलग करना

'आप खाद बनाने और री-साइकिलिंग आदि की जो शिक्षा दे रहे हैं वो सब ठीक है परंतु मैं एक व्यस्त आदमी हूं ओर मेरे पास बिल्कुल भी फालतू का समय नहीं है।'

आसपास के ग्रुपों द्वारा परिवारों के कूड़े-कचरे को अलग-अलग किया जा सकता है। हरेक परिवार या दुकान में चार बड़े-बड़े सीमेंट के थैलों के आकार के कागज़ के बने थैले रखे जा सकते हैं। अगर इस प्रकार के कागज़ के थैले ने मिलें तो सीमेंट के पुराने प्लास्टिक के बोरों का इस्तेमाल किया जो सकता है।

यह बोरे चार अलग-अलग रंगों के हो सकते हैं। एक बोरे में सड़ने वाला कूड़ा, दूसरे में धातु की चीज़ें, तीसरे में कांच और चौथे में पुराना प्लास्टिक आदि डाला जा सकता है।

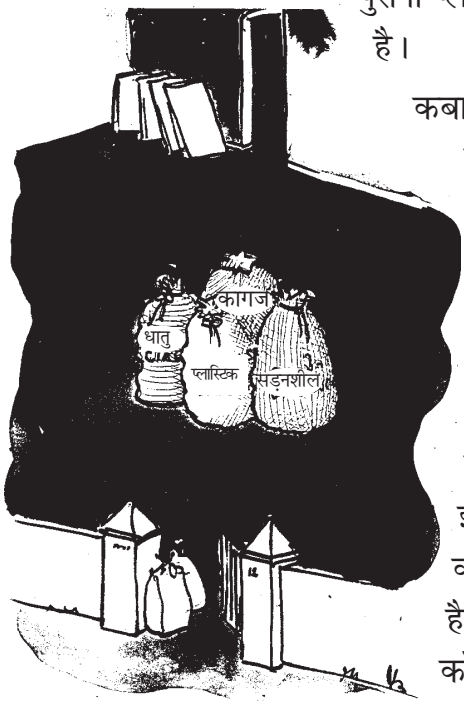

कबाड़ीवाला इस सब सामान को किसी निश्चित दिन उपयुक्त समय पर आकर ले जा सकता है। कबाड़ीवाला इस सामान को ऐसे लोगों को बेच देगा जो इसे दुबारा गला-पिघला कर कुछ नया माल बनाएंगे। कई जगहों पर इस कूड़े-कचरे को इकट्ठा करना एक बड़ी भारी समस्या है- इस पर हम आगे विचार करेंगे।

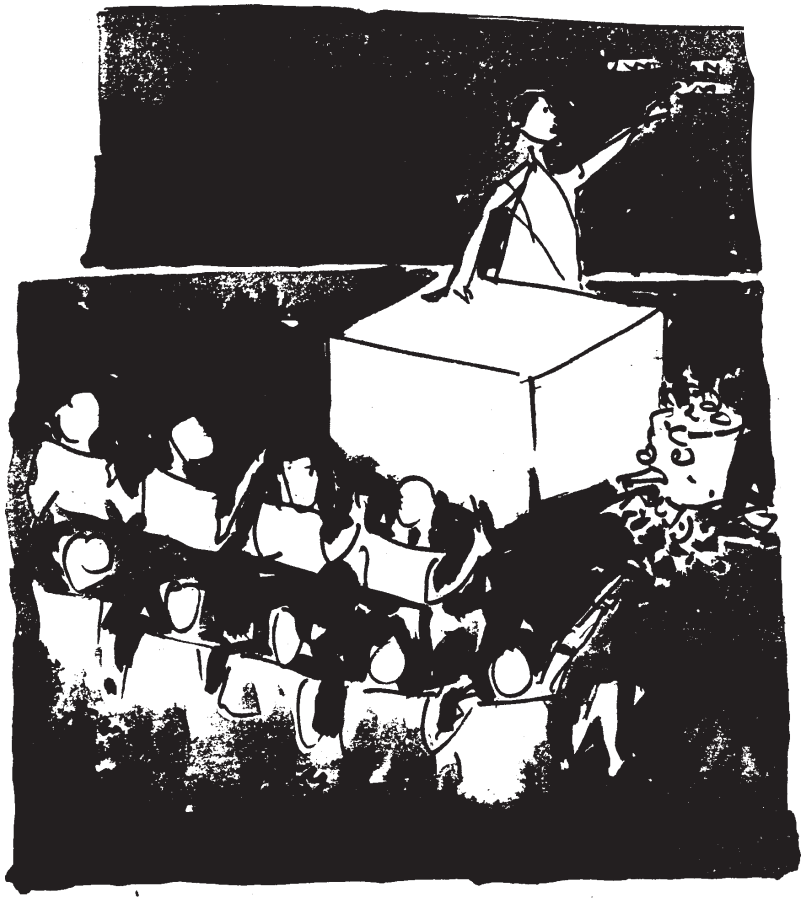

कूड़े-कचरे के इकट्ठे करने के काम में हमें एक महत्वपूर्ण बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए। हमें अपने घर के कूड़े-कचरे को इकट्ठे करने और उसे अलग-अलग करने का खुद उदाहरण पेश करना चाहिए। साथ में हमें कुछ अच्छी बातें अपने बच्चों को भी सिखानी चाहिए, जैसे:

1. जितना संभव हो कम-से-कम कचरा पैदा करें।
2. कूड़े-कचरे को छांट कर अलग-अलग थैलों में रखें।
3. स्कूल के टीचरों से कहें कि वो भी बच्चों में कूड़े-कचरे के प्रति संवेदना और चेतना पैदा करें।
4. छोटे कूड़े को इधर-उधर न फेंक कर सही कूड़ेदान में डालें।

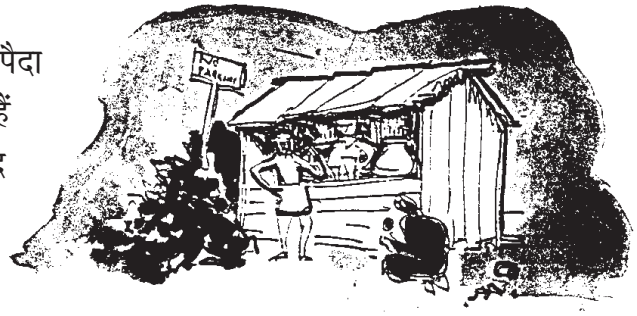

कुछ और कचरा पैदा करने वाले लोग हैं जिन्हें हमारी मदद की ज़रूरत है। ये हैं दुकानदार और फेरीवाले।

कई बार हमारी नगरपालिका और उसके अधिकारी ऐसी दुकानों को चलाने की अनुमति दे देते हैं जिनमें कोई शौचालय नहीं होता है और न ही कूड़े-कचरे को अलग-अलग रखने के की कोई सुविधा होती है। ऐसा वो क्यों करते हैं इसका उत्तर तो उन्हें ही पता होगा। कई दुकानों में तो पानी तक की सुविधा नहीं होती है!

शायद यहां हम कुछ मदद कर सकें। इसके लिए हमें हल्के-फुल्के, इधर-उधर उठाकर ले जाने वाले और दूर से ही दिखाई पड़ने वाले बड़े डिब्बे बना कर उन्हें दुकानों के पास रखना होगा। ये डिब्बे टिकाऊ हों इसलिए उन्हें फॉइबर ग्लास का बनाया जा सकता है। दिन में किसी निश्चित समय पर इन डिब्बों को खाली किया जा सकता है।

इसी प्रकार बाज़ार में फेरीवालों और छोटे दुकानदारों के लिए भी कुछ करने की आवश्यकता है। कई शहरों में मेन रोड के किनारे पटरीवालों, खोमचेवालों, रेहड़ीवालों का जमघट लगा रहता है।

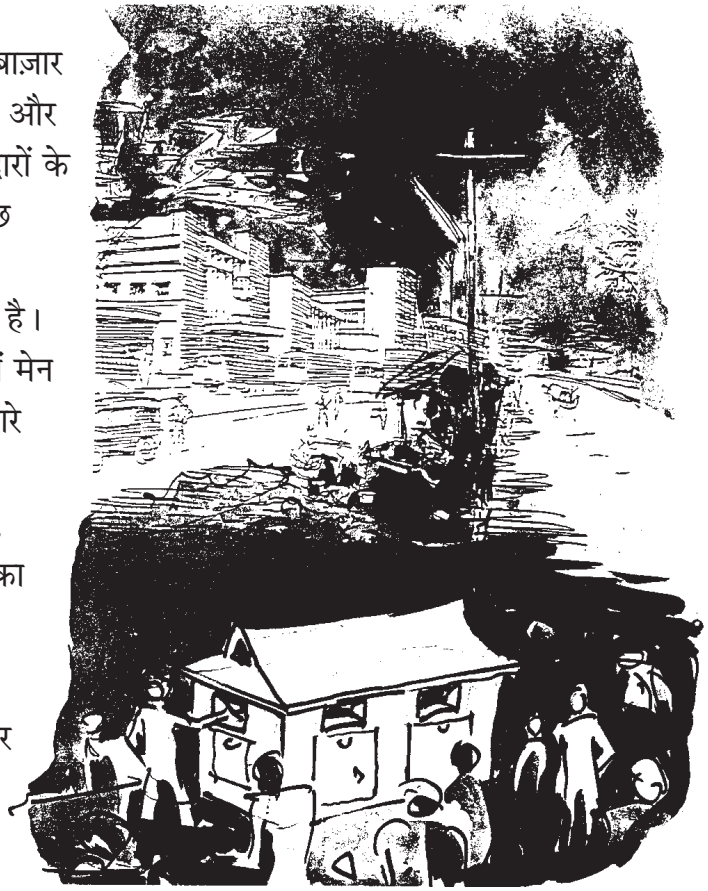

इन जगहों पर स्थाई रूप से फॉइबर ग्लास के कूड़ेदानों की आवश्यकता है। इनको लगाने और नियमित रूप से साफ करने का काम प्रशासन या नगरपालिका को ही करना होगा।

अगर खोमचेवाले इन कूड़ेदानों का सही इस्तेमाल नहीं करते हैं और अपने कूड़े को इधर-उधर फेंकते हैं तो उनपर जुर्माना लगाने का भी प्रावधान होना चाहिए। और अगर नगरपालिका के लोग कूड़ेदानों को नियमित रूप से साफ न करें तो उन्हें भी दंडित करने का प्रावधान होना चाहिए।

इन सभी प्रस्तावों और सुझावों की तीन मुख्य समस्याएं हैं।

1. इनके बारे में कौन निर्णय लेगा और कौन इन स्कीमों का खर्चा उठाएगा?
2. कौन नियमित रूप से कूड़े-कचरे को उठाएगा और कूड़ेदानों को साफ रखेगा?
3. और यह सारा कूड़ा-कचरा बाद में कहां ले जाया जाएगा? और (कूड़ेदानों से यह बदबूदार कूड़ा-कचरा डंप या री-साइक्लिंग डिपो तक कैसे ले जाया जाएगा?)

स्थाई कूड़ेदानों की कुछ खास बातें होनी चाहिए। वो

1. मज़बूत हों और न तो जल्दी खराब हों या टूटें।
2. दूर से साफ दिखाई पड़ें जिससे उन्हें ढूंढने में समय व्यर्थ न करना पड़े।
3. देखने में भी सुंदर हों। कहीं ऐसा न हो कि हम मलबे के ढेर जैसा ही कोई बदसूरत ढांचा खड़ा कर दें।
4. कुछ कूड़ेदान स्थाई होंगे जिन्हें समय-समय पर उठा कर ले जाना होगा और उनकी जगह नए कूड़ेदान रखने होंगे। यह कूड़ेदान उठाने में आसान हों यह बहुत ज़रूरी है।
5. कुछ स्थानों पर अलग-अलग रंगों के डिब्बे हों जिनमें अलग-अलग वस्तुओं जैसे प्लास्टिक, कांच, धातु और सड़ने वाली चीज़ों को डाला जा सके।

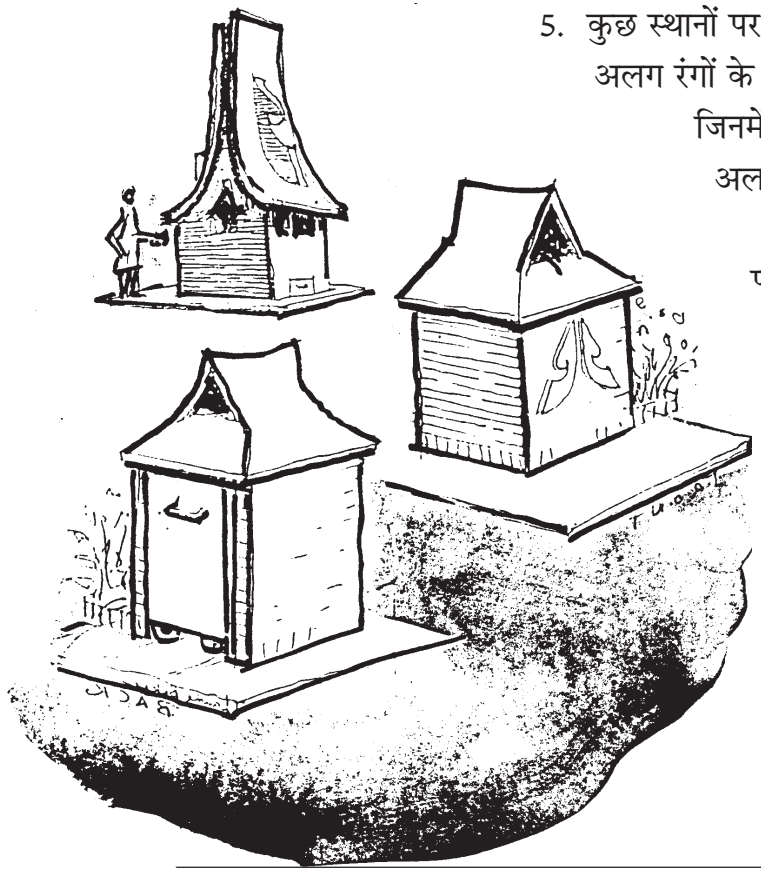

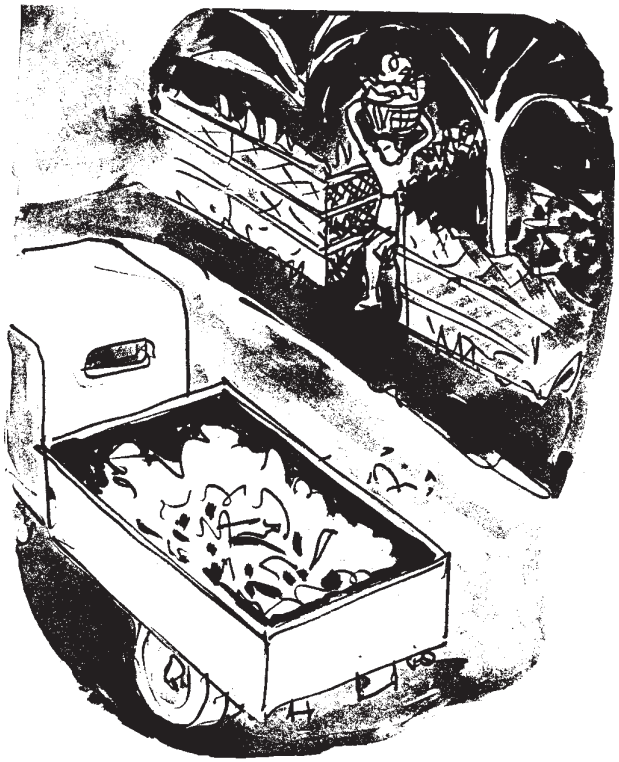

कूड़े-कचरे को शहर के अलग-अलग ठिकानों से कूड़े-कचरे के डंप तक ले जाने के लिए किसी गाड़ी या वाहन का इस्तेमाल करना पड़ेगा।

आप कौन या वाहन इस्तेमाल करते हैं यह इस बात पर निर्भर करेगा कि शहर से डंप कितनी दूरी पर है। बहुत सा कचरा मुख्य सड़कों से नहीं आता है बल्कि वो छोटी और सकरी गलियों में बसी बस्तियों से आता है। ट्रक और लौरियां केवल कचरे के कुछ ही ठिकानों तक पहुंच पाएंगी। मुख्य सड़क तक गलियों-कूचों से सिर पर कूड़े-कचरे को लाद कर लाना ठीक नहीं है। इस काम के लिए या तो तीन पहियों की साइकिल वाला ठेला इस्तेमाल किया जा सकता है या फिर ऑटोरिक्शा का उपयोग किया जा सकता है। ये ठेले और रिक्शे आराम से पतली गलियों में भी आ-जा सकते हैं।

साइकिल ठेले और ट्रक

ट्रक की तुलना में साइकिल ठेले से कूड़ा-कचरा ले जाने में कई फायदे हैं।

1. एक ट्रक की कीमत में आप 200 साइकिल ठेले खरीद सकते है।
2. साइकिल ठेले में कोई ईंधन खर्च नहीं होता है।
3. ठेलों से कोई वायु प्रदूषण भी नहीं होता है।
4. कोई ध्वनि का प्रदूषण भी नहीं होता है।
5. साइकिल ठेले लगभग कहीं भी जा सकते है।
6. ठेलों के रख-रखाव, टूट-फूट और रिपेयर का खर्चा भी कम है।
7. साइकिल ठेलों से बहुत से अशिक्षित लोगों के लिए नए रोज़गार पैदा होते हैं।
8. जब कूड़ेदानों को ठेलों में रखना हो तो कूड़ेदानों को बहुत ऊपर उठाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

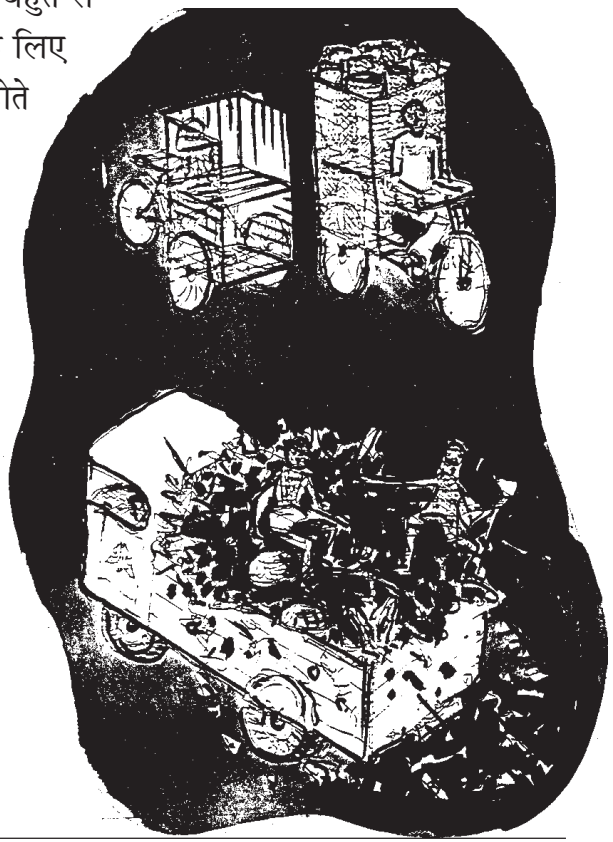

कचरा ढोने के लिए कई प्रकार के साधन

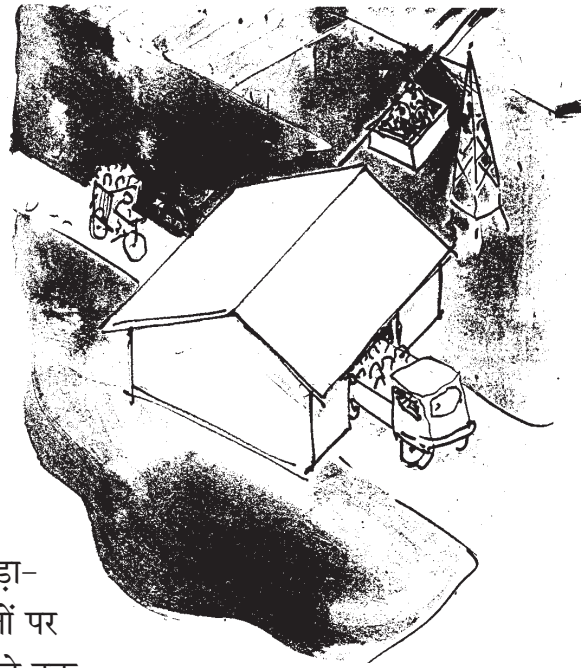

आप कचरा ले जाने के लिए किस प्रकार का वाहन इस्तेमाल करेंगे यह इस बात पर निर्भर करेगा कि शहर से कचरे का डंप कितनी दूरी पर है। अच्छा यही होगा कि आप मुख्य सड़क तक सारा कूड़ा-कचरा साइकिल ठेलों पर लाएं और वहां से बड़े ट्रक कचरे को ढोकर डंपयार्ड या री-साइक्लिंग के कारखानों तक ले जाएं।

कचरे के डंपयार्ड और री-साइक्लिंग के कारखाने अक्सर शहर से काफी दूरी पर स्थित होते हैं।

वहां तक कूड़े-कचरे को ले जाने के लिए भी अधिक उर्जा और मेहनत खर्च होती है। कचरे को ट्रक आदि से डंपयार्ड तक ले जाने की बजाए हम ऐरियल-रोप वे के बारे में भी सोच सकते हैं। इसमें तने तारों से ट्रालियां लटकती है और उनमें कचरे को लादकर सीधे डंपयार्ड तक भेजा जा सकता है। ये ट्रालियां धान के खेतों के ऊपर से गुज़रती हुई जा सकती है।

मुख्य डंपयार्ड

यानि वो स्थान जहां अंत में सारा कूड़ा-कचरा आकर इकट्ठा होगा।

यह पूरी स्कीम तब तक नहीं सफल होगी जब तक कूड़े-कचरे को शहर के बाहर दफनाने के लिए कोई उपयुक्त जगह नहीं उपलब्ध होगी।

इस प्रकार का स्थान ढूंढना और उसे उपलब्ध कराना स्थानीय नगरपालिका या सरकार का ही काम है। इस कूड़ा-कचरे के ढेर को हमें एक बदबूदार बढ़ते हुए पहाड़ के रूप में नहीं देखना चाहिए। यहां आसपास इस बात की सुविधाएं होनी चाहिए जिससे कि:

1. सड़ने वाल चीजों से खाद बनाई जा सके।
2. कागज, कांच, प्लास्टिक और धातुओं को अलग-अलग छांट कर री-साइकिल किया जा सके यानि इनसे दुबारा इस्तेमाल की वस्तुएं बनाई जा सकें।
3. मरे हुए जानवरों को दफनाने की सुविधा हो।

कूड़े-कचरे के लिए हमें इतना कुछ हल्ला-गुल्ला मचाने की क्या आवश्यकता है। हमारी जीवन शैली ही कुछ ऐसी हो गई है कि हम अपने द्वारा पैदा किए कचरे के खुद ही शिकार हो रहे हैं! अगर हमारे शहरों का कचरा हमारी राजनीति और आबादी की रफ्तार से बढ़ता रहा तो हमें गंदी बदबुएं सहनी पड़ेंगी, बीमारियां और खराब सेहत झेलनी पड़ेगी। हो सकता है कि आधुनिक जीवनशैली हमें पूरी तरह बरबाद कर दे और हमें अपनी जान से भी हाथ धोना पड़े। वैसे हम अपने कपड़ों और अपने शरीर को रगड़-रगड़ कर धोते हैं। परंतु आसपास कचरे के ढेरों को पहाड़ बनते देख हम कभी नहीं ठिठकते हैं। हम सब मिलकर सामूहिक कोशिश करें और कूड़े-कचरे को सही ठिकाने लगाने का प्रयास करें।

हम सभी लोग साल 2000 के स्वागत की अलग-अलग तरीकों से तैयारियां कर रहे हैं। 1000 साल बाद आए इस नए वर्ष के अभिवादन में मुख्य सड़कों के किनारे झंडे लगेंगे और रंगीन झाड़-फानूस और बल्ब लगेंगे। इनसे कुछ फायदा होगा कि नहीं परंतु सारी दुनिया में कचरे के ऊंचे-ऊंचे पहाड़ ज़रूर पैदा होंगे। कुछ दिनों तक खुशी और जलसे मना लेने के बाद झंडे और रंगीन बल्ब उतार लिए जाएंगे। परंतु आपकी राय में क्या बचेगा? क्या कोई उन कचरे के पहाड़ों को उठाएगा?

क चरा

च रमराती व्यवस्था

रा क्षसी

म रे जानवर

ल ोहा लंगड़

बा रूद का ढेर

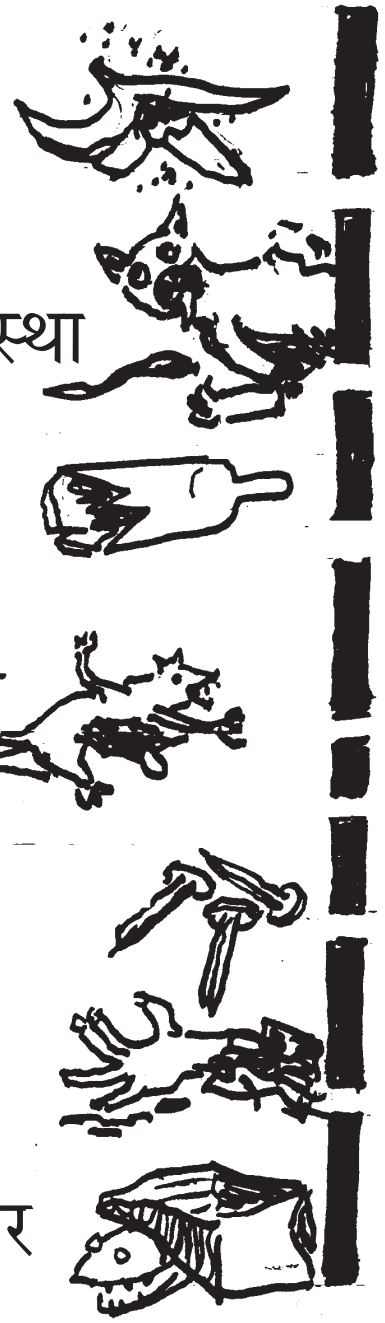

जहां तक कूड़े-कचरे का सवाल है मुझे नहीं लगता कि उसे ठीक ढंग से ठिकाने लगाने का बीड़ा सरकारी विभाग उठा पाएंगे। दूसरी ओर ऐसी कई अच्छी स्वयं-सेवी संस्थाएं हैं जो कि निरक्षर लोगों को, खासकर महिलाओं को, किसी रोज़गार की ट्रेनिंग दे रही हैं। इससे एक ओर तो बेराज़गार लोगों को काम मिलता है और दूसरी ओर फेंके हुए कूड़े-कचरे से खाद और अन्य चीज़ें बनती हैं। इससे देश ज़्यादा खुशहाल और सुंदर बनेगा।

पुराने ज़माने में मेहतर और भंगी होते थे जो सफाई का काम करते थे। हमें इस मानसिकता को छोड़कर खुद अपने आप कूड़े-कचरे को इकट्ठा करना चाहिए। बाद में इसे छांट कर प्लास्टिक, कागज़, धातु, कांच, सड़ने वाली चीज़ों को साफ-सुथरे आधुनिक कारखानों में ले जाकर इनको री-साइकिल करना चाहिए और इनसे काम की भिन्न-भिन्न वस्तुएं बनाना चाहिए। इस पुस्तक का नाम काफी उपयुक्त है- *बेकर* का कचरा और मुझे उम्मीद है कि इससे कूड़े-कचरे के बारे में आपका नज़रिया बदलेगा। एक ओर आप कम कचरा पैदा करेंगे और दूसरी ओर उसको सही प्रकार ठिकाने लगाएंगे। मुझे आशा है कि सरकारी और स्वयं-सेवी संस्थाएं दोनों ही इस दिशा में कारगार कदम उठाएंगी जिससे कि वर्ष 2000 कचरे से मुक्त मिलेनियम हो।

लौरी बेकर

अंत में मुझे लगता है कि यह सारी योजना
पूरे समुदाय का प्रोजेक्ट होना चाहिए।
यह योजना पूरे क्षेत्र के
सभी लोगों के लिए होनी चाहिए।
इसका लाभ भी पूरे इलाके के
सभी लोगों को मिलना चाहिए।
इस प्रोजेक्ट को सभी लोगों की मंजूरी
और सहयोग प्राप्त होना चाहिए।
सबको उसके बारे मे फिक्र होनी चाहिए
और सभी को उसकी सफलता
के लिए काम करना चाहिए।
तभी यह योजना सफल हो पाएगी।

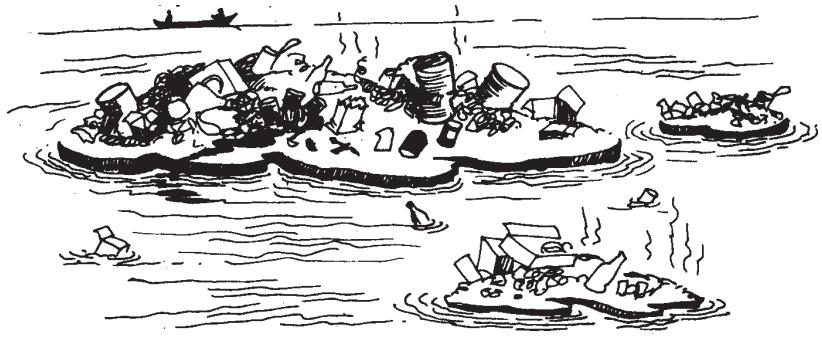

कचरे का जीवनकाल

तुम जियो हज़ारों साल